## ३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण - प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तानन्त है । उसका बहुभाग मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्ती है । तथा शेष एक भाग अन्य तेरह गुणस्थानों और सिध्दोंमें विभाजित है । इनमें भी मिथ्यादृष्टि और सिध्द क्रमहानिरूपसे अनन्तानन्त हैं । सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें असंख्यात है[1] (सासादनसे संयतासंयत तक चारों गुणस्थानोंके जीव समुच्चय व पृथक् पृथक् रूपसे भी पल्योपमके असंख्यातवें भाग है । इनमें भी असंचतसम्यग्दृष्टि सबसे अधिक, इनके असंख्यातवें भाग मिश्रगुणस्थानीय, इनके संख्यातवें भाग सासादनगुणस्थानीय तथा इनकेअसंख्यातवें भाग संयतासंयत जीव हैं। ) तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव संख्यात हैं जिनकी कुल संख्या तीन कम नौ करोड निश्चित हैं । यद्यपि अनन्तको संख्यामें उतारना भ्रामक हो सकता है, तथापि धवलाकारने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिको १६ और इनमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिको १३, तथा सासादनादि तेरह गुणस्थानोंके जीवों और सिध्दोंका संयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है । अब हम यदि इसी अंकसंदृष्टीके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिध्दोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहे, तो स्थूलत: इस प्रकार किया जा सकता है ---

## चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टि

| गुणस्थान | प्रमाण | अंकसंदृष्टि | |
|---|---|---|---|
| १. मिथ्यादृष्टि | अनन्त | १३ | |
| *२. सासादन | असंख्य | ७/६४ | |
| ३. मिश्र | ,, | १६/६४ | १५/१६ |
| ४. अविरतसम्यग्दृष्टि | ,, | ३२/६४ | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५. संयतासंयत | ,, | | ५/६४ |
| ६. प्रमत्तविरत | ५९३९८२०६ | | |
| ७. अप्रमत्तविरत | २९६९९१०३ | | |
| ८. अपूर्वकरण | ८९७ | | |
| ९. अनिवृत्तिकरण | ८९७ | | |
| १०. सूक्ष्मसाम्पराय | ८९७ | ८९९९९९९७ | १/१६ |
| ११. उपशान्तमोह | २९९ | | |
| १२. क्षीणमोह | ५९८ | | |
| १३. सयोगिकेवली | ८९८५०२ | | |
| १४. अयोगिकेवली | ५९८ | | |
| सिध्द | अनन्त | २/१६ | |
| सर्वजीवराशि | अनन्त | | |

चौदहों गुणस्थानोंकी जीवराशियोंके प्रमाण-प्ररू पणाके पश्चात् उनका भागाभाग और फिर उनका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। भागाभागमें सामान्य राशिको लेकर विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आये हैं। अल्पबहुत्वमें सबसे छोटी राशिसे प्रारंभ करके गुणा और योग (सातिरेक) करते हुए सबसे बडी राशितक पहुंचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। स्वस्थानमें केवल अवहारकाल और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। परस्थानमें अवहारकाल, भाज्य तथा अन्य जो राशियां उनके प्रमाणके बीचमें आ पडती हैं उनका और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सर्वपरस्थानमें उक्त राशियोंके अतिरिक्त अन्य राशियोंसे भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है।

(पृ. १०१-१२१)